IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

ब्रिटिश भारत में प्रतिबंधित हिंदी जीवनी-साहित्य

ललित कुमार

सहायक आचार्य, हिंदी

राजकीय महाविद्यालय कुम्भलगढ़, राजस्थान

Abstract: भारत के स्वतंत्रता-संग्राम कालीन सभी पक्षों पर बहुत गंभीर अकादमिक कार्य हुआ है। इतिहासकारों ने इस काल के प्रत्येक पहलु पर गंभीरता से विचार किया है। लेकिन इतने महत्वपूर्ण अकादमिक कार्य के होने पर भी, उस काल का 'प्रतिबंधित साहित्य' एक ऐसा पक्ष है जिस पर समग्र तथा समुचित दृष्टिपात नहीं किया जा सका है। एक साम्राज्यवादी सरकार के विरुद्ध चल रहे राष्ट्रव्यापी आन्दोलन का इतिहास लिखते हुए अगर उस समय के प्रतिबंधित साहित्य को अनदेखा किया जाता है तो यह इतिहासलेखन की एक गंभीर खामी की ओर संकेत है।

हिंदी साहित्य के बारे में बात की जाए तो यह निर्विवाद रूप से कहा जा सकता है कि हिंदी साहित्य, आधुनिक काल के आरम्भ से लेकर स्वतंत्रता प्राप्ति तक किसी-न-किसी रूप में स्वाधीनता संग्राम एवं तत्कालीन राजनीतिक परिस्थितियों से सदैव प्रभाव ग्रहण करता रहा है। हाँ, यह जरुर है कि इस प्रकार से प्रभाव ग्रहण किया हुआ साहित्य समय-समय पर विभिन्न रूपों में सामने आता रहा है, कभी प्रतीकात्मक व परोक्ष रूप से स्वाधीनता के मूल्यों का समर्थन करता हुआ तो कभी प्रत्यक्ष व अभिधा में; कभी अहिंसा जैसे मूल्यों के पक्ष में तो कभी क्रांति का बिगुल बजाते हुए। अतः इस काल के पूरे साहित्य को स्वाधीनता संग्राम के संदर्भ में पुनर्व्याख्यायित करने की आवश्यकता है। यह कार्य कुछ मात्रा में हिंदी के आलोचकों द्वारा किया भी गया है, जिसमें डॉ रामविलास शर्मा का नाम प्रमुख है। लेकिन 'प्रतिबंधित साहित्य' को इसमें भी यथोचित स्थान नहीं मिला है। यहाँ इस लेख में संक्षिप्त में स्वतंत्रता संघर्ष काल में प्रतिबंधित हिंदी जीवनी-साहित्य का विवेचन है।

Keywords: प्रतिबंधित हिंदी साहित्य, क्रन्तिकारी साहित्य, हिंदी जीवनी साहित्य, आधुनिक हिंदी साहित्य, क्रन्तिकारी जीवनियाँ, हिंदी नवजागरण, भारत का आधुनिक इतिहास, इतिहास लेखन और नवजागरण, हिंदी गद्य साहित्य, भारत का स्वाधीनता संग्राम।

हिंदी साहित्य के इतिहास में आधुनिक काल को आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने 'गद्य काल' की संज्ञा दी है जो कि केवल विधागत आधार पर रखा गया नाम नहीं है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल इस तथ्य से अनजान नहीं थे कि इस काल में भी पद्य-रचना में कई महत्वपूर्ण कवि निरत थे। उनके द्वारा इस नामकरण के पीछे यही निहितार्थ था कि इस काल में संक्रमण का सबसे महत्वपूर्ण बिंदु – 'साहित्य में विचार का आगमन' है। गद्य तो पहले भी लिखा जाता था लेकिन इस समय जिस तरह के विचारपूर्ण गद्य लेखन की शुरुआत हुई उसे सही अर्थों में परिवर्तन के स्पष्ट सन्दर्भ के रूप में ग्रहण किया जा सकता है। इससे पहले गद्य में भी तुकबंदी

और भाषाई साज-सजावटों एवं अलंकारों का विशेष ध्यान रखा जाता था जबकि अब पद्य में भी विचार महत्त्वपूर्ण हो गया। साहित्य के 'विषयों में आमूलचूल परिवर्तन' आधुनिकता के आगमन के साथ बहुत गहरे रूप में जुड़ा हुआ है और साहित्य में 'आधुनिक काल' नामकरण का कारण भी यही है। जहाँ मध्यकाल में ईश्वर तथा समाज केंद्र में थे वहीं अब आधुनिकता के आगमन के साथ ही ईश्वर की जगह मानवता ने एवं समाज की जगह मनुष्य ने ले ली। अब ईश्वर की भक्ति वाले साहित्य के स्थान पर मनुष्य के कष्टों और उनकी मुक्ति के प्रश्न पर सृजित साहित्य प्रमुख हो गया। हालांकि भारत में आधुनिकता का आगमन भिन्न तरीके से हुआ। धर्म-सुधार आन्दोलनों को भारत में आधुनिकता के आगमन के प्रथम चरण के रूप में देखा जा सकता है। हिंदी साहित्य में आधुनिक काल की शुरुआत धर्म-सुधार आन्दोलनों के सामानांतर ही होती है और यह समय है – 19वीं शताब्दी के मध्य का। हालाँकि आधुनिक काल के शुरुआत के निर्धारण को लेकर विभिन्न इतिहासकारों में मतभेद हैं लेकिन इस बात को ध्यान में रखते हुए कि किसी भी भाषा के साहित्य को किसी एक वर्ष में बदला हुआ नहीं माना जा सकता बल्कि बदलने की प्रक्रिया सतत चलती है, 19वीं शताब्दी के मध्य से आधुनिक काल की शुरुआत मानना ही समुचित है।

19वीं शताब्दी के मध्य से साहित्य में यह बदलाव देशकाल की परिस्तिथियों से अछूता नहीं था। यह काल सामाजिक स्तर पर एक ओर जहाँ धर्म व समाज-सुधार आन्दोलनों का समय था वहीं इस समय में देश के राजनीतिक पटल पर भी कई महत्वपूर्ण बदलाव हुए। 1857 ई. के असफल स्वतंत्रता संग्राम के बाद अब भारत का शासन ब्रिटिश ताज के प्रत्यक्ष नियंत्रण में आ गया। इससे भी महत्वपूर्ण बदलाव यह हुआ कि अब साम्राज्यवादी सरकार राजनैतिक विद्रोहों को लेकर और ज्यादा सावधान हो गयी। अब सरकार की सभी नीतियाँ 1857 ई. के स्वाधीनता संग्राम से प्राप्त अनुभवों के अनुसार बनने लगी और इसी क्रम में प्रेस पर नियंत्रण हेतु 'लाइसेंसिंग एक्ट 1857' व 'रजिस्ट्रेशन एक्ट 1867' जैसे कानून लाए गए। तत्पश्चात लगातार प्रेस पर नियंत्रण बढ़ता ही गया। 1878 ई. में वर्नाकुलर प्रेस एक्ट, 1908 ई. में न्यूज़पेपर एक्ट, 1910 ई. में इंडियन प्रेस एक्ट आदि प्रमुख प्रेस नियंत्रण कानून लागू किए गए। इन सबका उद्देश्य भारतीयों में उत्तरोतर विकसित हो रही राजनीतिक चेतना को दबाना था। साम्राज्यवादी अंग्रेजी सरकार ने यह भली-भांति भाँप लिया था कि अगर उनको हिंदुस्तान में अपने हित साधने हैं तो प्रेस पर नियंत्रण बहुत आवश्यक है। समय के साथ जैसे-जैसे जनता में राजनीतिक चेतना का विकास हो रहा था और शिक्षा की पहुँच बढ़ रही थी उसी अनुपात में प्रेस पर नियंत्रण भी बढ़ता गया। 19 वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध तक प्रतिबंधित रचनाओं की संख्या बहुत कम हैं। इस समय में प्रेस कानूनों की चपेट में मुख्य रूप से पत्र-पत्रिकाएँ ही आयीं हैं। दूसरा, चूँकि इस दौर के लेखकों ने साहित्य-रचना में विशेष सावधानी इसलिए रखी है ताकि उनकी रचनाएँ या पत्रिकाएँ ब्रिटिश हुक्मरान के नजरों में आने से बची रहे। यह नीति उस पूरे काल में रही जिसे हम हिंदी साहित्य के इतिहास में 'भारतेंदु युग' व 'द्विवेदी युग' के नाम से जानते हैं। हालाँकि इस काल में भी देश की समस्याओं का चित्रण तो हुआ है लेकिन साथ-ही-साथ 'राजभक्ति' का पुट भी है, यही कारण था कि ऐसी रचनाएँ जब्त होने से बचती रही।

भारतीय राजनीति में गाँधी के आगमन के बाद इस स्थिति में आश्चर्यजनक परिवर्तन देखने को मिलता है। पहले राष्ट्रीय आन्दोलन – असहयोग आन्दोलन (1920-21) – से लेखकों की मानसिकता में विशेष परिवर्तन हुआ। यहाँ से राजनीतिक निडरता

का काल शुरू हुआ और अब 'राजभक्ति' की नीति को पूर्णरूप से त्याग दिया गया। यह परिवर्तन असहयोग आन्दोलन से पूर्व की प्रतिबंधित रचनाओं तथा असहयोग के बाद की प्रतिबंधित रचनाओं की संख्या के तुलनात्मक अध्ययन से स्पष्ट हो जाता है।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने आधुनिक काल को विभाजित करते हुए कई 'उत्थानों' की व्यवस्था दी। अगर ठीक से देखा जाए तो ये 'उत्थान' इस काल के राजनीतिक घटनाक्रमों एवं उनसे प्रभावित साहित्यिक प्रवृतियों के आधार पर तय किए हुए ही जान पड़ते हैं। "(भारतेंदु हरिश्चंद्र ने) गद्य साहित्य को देशकाल के अनुसार नए-नए विषयों की ओर लगाया, उसी प्रकार कविता की धारा को भी नए-नए क्षेत्रों की ओर मोड़ा। इस नए रंग में सबसे ऊँचा स्वर देशभक्ति की वाणी का था। उसी से लगे हुए विषय लोकहित, समाज-सुधार, मातृभाषा का उद्धार आदि थे।"[1] आधुनिक काल को गद्य काल कहे जाने के संबंध में ऊपर जो संक्षिप्त विवेचन किया गया है उसी के साथ आचार्य शुक्ल के इन कथनों को देखने से यह स्पष्ट हो जाता है कि "इस युग के जनजीवन और तद्नुसार साहित्य की भी मुख्य प्रवृति निश्चित रूप से देशभक्ति और उससे प्रेरित विदेशी साम्राज्यवादी दासता के विरुद्ध स्वातंत्र्य-संघर्ष ही रही है।"[2]

हिंदी के उपलब्ध प्रतिबंधित साहित्य का विश्लेषण करने पर पता चलता है कि इसका एक बड़ा हिस्सा पद्य में है। पद्य में भी 'गीत' विधा में लिखा गया साहित्य सर्वाधिक मात्रा में मिलता है। इसका कारण यह है कि गीत जैसी विधा जनसमुदाय के कंठ में लम्बे समय तक जीवित रह पाती है। "...स्वाधीनता-संग्राम का प्रभाव और उसकी स्पष्ट छाप साहित्य की अन्य विधाओं की अपेक्षा काव्य पर अधिक पड़ी। इसका कारण यह दिखता है कि साहित्य के अन्य रूप मुद्रण और प्रकाशन के जितने मुहताज होते हैं कविता, विशेषतः स्फुट और मुक्तक कविता, उतनी नहीं। अतः सरकार की शनिदृष्टि से वह उतनी ही सुरक्षित बनी रह सकती थी। सभाओं में, काव्यगोष्ठियों में, कवि सम्मेलनों में कविगण 1857 के स्वातंत्र्य संग्राम या उसके वीरों के पराक्रम के संबंध में कविताओं का पाठ करके भी सुरक्षित बने रह सकते थे, यदि सरकारी रिपोर्टर कवि के पीछे ही न पड़ जायें। परन्तु छपकर सामने आने वाली कृतियों के संबंध में सरकारी अधिकारीयों को, उनके संबंध में ध्यान न देने का कम अवकाश या बहाना रहता था। ऐसी बहुत-सी कविताएँ, देशभक्ति संबंधी, इस युग में प्रणीत हुई कि उनके कवियों को तो कुछ नहीं, परन्तु उनके प्रकाशकों को सरकार से दंड भुगतना पड़ा।"[3]

ऐसे गीतों व कविताओं में आह्वान की कविता सबसे अधिक दृष्टव्य है जिसमें विभिन्न तरीकों से जनता को जागरूक करने के प्रयत्न दिखाई देते हैं। वहीं प्रतिबंधित गद्य रचनाओं की संख्या भी कम नही हैं। प्रतिबंधित गद्य में सर्वप्रमुख विधा कथा साहित्य, जिसमें कहानी एवं उपन्यास, तथा नाटक हैं। इसके अलावा वैचारिक निबंध भी बड़े परिमाण में प्रतिबंधित हुए हैं।

अन्य गद्य विधाओं में वर्तमान समय में स्थापित लगभग सभी गद्य विधाएँ ऐसी मिल ही जाएगी जो साम्राज्यवादी सरकार द्वारा प्रतिबंधन का शिकार हुई थीं। इन रचनाओं के बारे में यह जरूर कहा जा सकता है कि ये रचनाएँ उन सभी प्रतिमानों पर ठीक-ठीक खरी तो नहीं उतरती जो इनके विकसित अवस्था में आने के बाद बने, लेकिन किसी-न-किसी रूप में इन रचनाओं को साहित्य में शामिल करना ही पड़ेगा, क्योंकि इनकी भाषा-शैली और इनका प्रभाव इन्हें साहित्यक रचना के दायरे से बाहर

नहीं होने देता। दूसरा, कोई भी विधा अपने शुरुआती रूप में उन सभी प्रतिमानों पर कभी खरा नहीं उतर सकती जो उसके विकसित होने के बाद बनाए जाते हैं।

प्रतिबंधित हिंदी साहित्य में ऐसी रचनाएँ बहुतायत में हैं जिनको 'जीवनी' विधा के अंतर्गत रखा जा सकता है। परिमाण की दृष्टि से देखा जाए तो मुक्तक कविता, नाटक व कथा साहित्य के बाद जीवनी ही वह विधा है जो संख्यात्मक दृष्टि से बहुत अधिक प्रतिबंधों का शिकार हुई। अंग्रेजी सहित सभी भारतीय भाषाओं में प्रतिबंधित जीवनियों की कुल उपलब्ध संख्या इस प्रकार है –

भाषा-	अंग्रेजी	बंगाली	गुजरती	हिंदी	कन्नड़	मलयालम	मराठी	पंजाबी	सिंधी	तमिल	तेलुगु	उर्दू	कुल
संख्या[4]-	9	29	6	42	1	1	13	10	5	8	3	20	147

ऊपर सारणी में दी गई संख्या जीवनी के विषय के आधार पर है। कई प्रतिबंधित पुस्तकें ऐसी भी हैं जिनमें एक ही पुस्तक में एकाधिक व्यक्तियों की जीवनियाँ संकलित हैं। जैसे 'आजादी के शहीद' शीर्षक प्रतिबंधित पुस्तक में कुल 11 क्रांतिकारियों की जीवनियाँ संकलित हैं – मदन लाल धींगरा, कांतिलाल दत्त, खुदीराम बोस, सत्येन्द्रनाथ बोस, सूफी अम्बा प्रसाद, भाईलाल मुकुंद, अमीर चंद, गेंदालाल दीक्षित, करतार सिंह, अवधबिहारी और जतिन्द्रनाथ मुखर्जी। इसके अलावा कुछ पुस्तकों में अन्य सामग्री के साथ-साथ जीवनी/जीवनियाँ भी शामिल हैं। हो सकता है ऐसी कुछ पुस्तकों के प्रतिबंधन का आधार उसमें संकलित जीवनी न होकर अन्य कोई सामग्री हो, ऐसे में उक्त सारणी में केवल उन्हीं जीवनियों की संख्या सम्मिलित की गई हैं जो किसी-न-किसी रूप में प्रतिबंधन का आधार रही हो। कुछ ऐसी भी जीवनियाँ रही हैं जो प्रतिबंधित पुस्तक में संकलित भी है और विषय की दृष्टि से भी ऐसी है जिसे अंग्रेजी सरकार द्वारा प्रतिबंधित किया जा सकता हो किन्तु उस पुस्तक के प्रतिबंधित होने का मुख्य आधार दूसरी सामग्री थी अतः ऐसी जीवनियों को भी शामिल करने का पर्याप्त कारण होते हुए भी छोड़ दिया गया है। अर्थात् शोध सामग्री की विश्वसनीयता के लिए पुस्तक के प्रतिबंधन की आधार सामग्री का भी ध्यान रखा है और इसके लिए यथासंभव पुस्तक के प्रतिबंधन की रिपोर्ट्स को देखकर ही सामग्री का चयन किया गया है। जैसे, चाँद के फाँसी अंक में 'विप्लव यज्ञ की आहुतियाँ' शीर्षक में 47 प्रसिद्ध क्रांतिकारियों के जीवनीपरक लेख संकलित हैं।[5] इस अंक की प्रतिबंधन की रिपोर्ट में इस शीर्षक – 'विप्लव यज्ञ की आहुतियाँ' – की सामग्री का स्पष्ट उल्लेख करते हुए इसे प्रतिबंधन के मुख्य आधार के रूप में ग्रहण किया है –

“Under the headlines "Oblations to the sacrificial-fire of revolution” the magazine publishes brief sketches of the lives of persons (including accounts of their revolutionary activities) who have revolted against the Government since the Kooka revolt and have been executed. These sketches also include Bengal and Punjab revolutionaries and the Kakori prisoners. The sketch of the life of Bhai Balmukund concludes as follows:— "His beautiful sacrifice was rendered all the more glorious by his wife, Ramrakhi, becoming sati . . . ‘She departed far away from where the laws of cruel rulers hold sway.” The following passages occur in the life of Kartar Singh: “(While in America) he was almost maddened to hear words like “Damn Hindu” “Black Coolie’ from the lips of inebriate white Americans . . . Recollections of home

brought before his mind's eye the subject, ??, disgraced, plundered and helpless India . . . The question arises again today what good his death has done. Why did he die? The answer is plain. He died for death's sake. His ideal was to die in the service of the country. He did not aspire for anything more. He longed to die unknown. His ideal was (to die}) unsung, unhonoured and unwept."[6]

प्रतिबंधित जीवनीपरक पुस्तकों एवं ऐसी पुस्तकों जिनमें अन्य सामग्री के साथ-साथ जीवनियाँ भी संकलित हैं और उनके प्रतिबंधित होने के आधार के रूप में भी वे जीवनियाँ शामिल हैं, की संख्या इस प्रकार हैं –

भाषा -	अंग्रेजी	बंगाली	गुजरती	हिंदी	कन्नड़	मलयालम	मराठी	पंजाबी	सिंधी	तमिल	तेलुगु	उर्दू	कुल
संख्या[7] -	10	11	5	26+1[8]	1	1	9	3	3	7	2	10	89

इतनी विशाल मात्रा में प्रतिबंधित जीवनी-साहित्य के प्रतिबंधन की राजनीति को समझने के लिए आवश्यक है कि इनके सृजन के कारणों का विवेचन किया जाए। एक साम्राज्यवादी सरकार द्वारा साहित्य पर प्रतिबंध आरोपित करने के कारण सीधे और स्पष्ट होते हैं। ऐसी सरकारें चाहती हैं कि वे जिस देश पर शासन करें उसकी जनता राजनीतिक चेतना से सम्पृक्त न हो पाए ताकि सरकार को अपने हित साधने में कोई परेशानी नहीं हो और शासन लम्बे समय तक बना रहे। उनके इस प्रयास में जो भी बाधा डालने की कोशिश करता उसे सरकार भिन्न-भिन्न माध्यमों से दबाने की कोशिश करती है। साहित्य पर प्रतिबंध भी उसी का एक हिस्सा है। यही कारण है कि वही साहित्य प्रतिबंधित किया जाता था जिससे किसी-न-किसी रूप में जनता में राजनीतिक चेतना का विकास होना परिलक्षित होता हो। इसमें सरकार की गलत नीतियों का विरोध; विभिन्न वर्गों यथा किसान, मजदूर आदि की आर्थिक दुर्दशा का चित्रण; मूलनिवासियों के समाज, उनकी संस्कृति पर कुठाराघात का चित्रण या जनता में राजनीतिक चेतना का विकास करने वाले ऐसे प्रेरणादायी व्यक्तित्वों यथा क्रांतिकारियों और उनके कार्यों का चित्रण हो सकता था जिनके कारण इन पर प्रतिबंध आरोपित किए गए। इन विषयों को साधने वाली विधाओं के बारें में विश्लेषण किया जाए तो कविता, नाटक, कथा साहित्य तथा विचार साहित्य के बाद जीवनी सबसे उपयुक्त विधा के रूप में सामने आती है। किसी क्रांतिकारी के जीवन एवं उसके कार्यों का उल्लेख-मात्र प्रेरणा का स्रोत हो सकता था। यही कारण था कि अंग्रेजी सरकार ने जीवनियों पर बहुतायत में प्रतिबंधित आरोपित किए।

उपलब्ध प्रतिबंधित जीवनियों में लगभग सभी जीवनियाँ ऐसे व्यक्तित्वों की हैं जिन्होंने किसी-न-किसी रूप में अपने देश से आततायी शासन को उखाड़ फेंकने का कार्य किया या ऐसा प्रयास किया और इसके लिए सशस्त्र क्रांति का सहारा लिया हो। अहिंसा के मूल्यों का समर्थन करने वाले व्यक्तित्वों में महात्मा गाँधी की जीवनियाँ सर्वाधिक मिलती हैं। कई बार तो गाँधी की जीवनी भी इस प्रकार से लिखी गई प्राप्त होती है जिसमें अहिंसा को एक मूल्य के रूप शामिल तो किया गया हो लेकिन प्रकारांतर से हिंसा का ही समर्थन हो। सम्पूर्ण परिप्रेक्ष्य में देखा जाए तो भगत सिंह की जीवनियाँ सर्वाधिक संख्या (14) में मिलती हैं, जो

कि सात हिंदी में, दो-दो उर्दू और गुजराती में तथा एक-एक अंग्रेजी, असमिया व मराठी भाषा में हैं। भारतीय क्रांतिकारियों में भगत सिंह के अलावा यतीन्द्रनाथ दास, सुभाष चन्द्र बोस, चन्द्र शेखर आजाद, रामप्रसाद 'बिस्मिल', राजगुरु, सुखदेव, विनायक दामोदर सावरकर, खुदीराम बोस, पुलिनबिहारी दास आदि क्रांतिकारियों की जीवनियाँ बड़ी संख्या में हैं, वहीं अन्य देशों के प्रसिद्ध नेताओं की जीवनियाँ भी बहुतायत में प्रतिबंधन का शिकार हुईं थीं जिनमे लेनिन, सन् यात सेन, एमन द वलेरा आदि प्रमुख हैं। रूसी क्रांतिकारियों व आयरिश क्रातिकारियों की जीवनियाँ विदेशी क्रांतिकारियों में सर्वाधिक हैं। प्रतिबंधित आयरिश क्रातिकारियों में जॉन मिशेल, एमन द वलेरा (हिंदी में दो जीवनियाँ व तमिल में एक), डान ब्रीन (हिंदी व पंजाबी में एक-एक), माइकल कॉलिंस, रोबर्ट क्रॉसवर्ड व आर्थर ग्रिफिथ की जीवनियाँ प्रमुख हैं। रूसी क्रांतिकारियों में लेनिन, मिखाइल अलेक्सांद्रोविच, एकतेरिना कांस्तेंतिनोवा, वेरा निकोलायवेना फिंगर, अलेक्सेंडर इवानोविच गेर्त्से, इपोलित निकित्व मुइत्शिन व निहिलस्ट आन्दोलनकारियों की जीवनियाँ प्रमुख हैं। स्वतंत्रता संग्राम के क्रांतिकारियों पर रूसी क्रांति व आयरिश क्रांति का प्रभाव प्रसिद्ध है। इसी तथ्य से इस तरह की जीवनियों की सार्थकता स्पष्ट हो जाती है। ऐसी जीवनियों में कुछ अनुवाद हैं तो कुछ मौलिक भी हैं। रूस तथा आयरलैंड के अलावा अन्य राष्ट्रों के क्रान्तिनायकों की प्रतिबंधित जीवनियाँ भी प्राप्त होती हैं, इनमें पोलेंड के जोज़ेफ क्लेमेन्स पिल्सुद्सकी, फिलिपीन्स के जोस रिज़ल, तुर्की के कमाल पाशा, बुल्गारिया के जोर्जी दिमित्रोव व मेक्दोनिया के इवान मिखाइलोव प्रमुख नाम हैं। इससे स्पष्ट है कि स्वाधीनता संग्राम में राजनीतिक चेतना के विकास हेतु उस समय के लेखक न केवल भारतीय क्रांतिकारियों बल्कि अन्य देशों की क्रांति और उनके क्रांतिकारियों के जीवन से भी प्रेरित थे तथा अपने लेखन के माध्यम से आमजन में क्रांति के मूल्यों को भरने के लिए प्रतिबद्ध थे।

प्रतिबंधित भारतीय क्रांतिकारियों की जीवनियों का संख्यात्मक विवरण इस प्रकार है[9] -

(व्यक्ति, संख्या, भाषा)

अमीर चंद, 2, हिंदी, पंजाबी; श्री अरबिंदो, 1, मराठी; अवधबिहारी, 1, हिंदी; चन्द्रशेखर आजाद, 3, गुजरती, हिंदी-2; नलिनीकांत बागची,1, बंगाली; भाई बालमुकुन्द, 2, हिंदी, पंजाबी; सुरेन्द्रनाथ बनर्जी, 1, बंगाली; उपेन्द्रनाथ बनर्जी, 1, बंगाली; भगत सिंह, 14, अंग्रेजी, असमिया, गुजराती-2, हिंदी-7, मराठी, उर्दू-2; भवानी दयाल सन्यासी, 1, अंग्रेजी; रामप्रसाद बिस्मिल, 2, हिंदी, उर्दू; आनंदमोहन बोस, 1, बंगाली; कृष्ण विनय बोस, 1, अंग्रेजी; खुदीराम बोस, 3, हिंदी, पंजाबी, उर्दू; रासबिहारी बोस, 1, बंगाली; सत्येन्द्रनाथ बोस, 2, हिंदी, मराठी; सुभाषचंद्र बोस, 3, हिंदी, तमिल, उर्दू; प्रमोदरंजन चौधरी, 1, बंगाली; KVV चिपलूनकर, 1, मराठी; चितरंजन दास, 3, बंगाली, हिंदी, उर्दू; जतीन्द्रनाथ दास, 6, अंग्रेजी, हिंदी-2, मराठी, तेलुगु, उर्दू; पुलिनबिहारी दास, 1, बंगाली; पूर्णचन्द्र दास,1, बंगाली; इमोन दे वलेरा, 3, हिंदी-2, तमिल; गेंदालाल दीक्षित, 1, हिंदी; जॉर्जी दिमित्रोव, 1, हिंदी; भूपेन्द्रनाथ दत्त,1, बंगाली; कनैलाल दत्त, 3, हिंदी, मराठी, पंजाबी; उलास्कर दत्त,1, बंगाली; मोहनदास

करमचंद गांधी, 1, अंग्रेजी; बारीन्द्रकुमार घोष,1, बंगाली; शैलेन्द्रनाथ घोष,1, गुजराती; दलबहादुर गिरी, 1, बंगाली; हसन् इब्न सबाह,1, हिंदी; एडोल्फ हिटलर, 3, हिंदी, कन्नड़, तमिल; सुरेन्द्रनाथ कर, 1, बंगाली; करतार सिंह, 1, हिंदी; खान अब्दुल ग़फ़र खान, 1, तमिल; अशफ़ाक़ उल्लाह खान, 1, उर्दू; राजेन्द्र नाथ लाहिड़ी, 1, उर्दू; लाला लाजपत राय, 3, बंगाली, मराठी, उर्दू; लेनिन, 1, मराठी; मथुरा सिंह,1, पंजाबी; मेवा सिंह, 1, हिंदी; जॉन मिशेल, 1, बंगाली; मोटा सिंह, 1, पंजाबी; अवनीनाथ मुखर्जी, 1, बंगाली; जतीन्द्रनाथ मुखर्जी, 2, हिंदी, पंजाबी; जवाहरलाल नेहरू,2, तमिल, उर्दू; सरदार वल्लभ भाई पटेल,1, तमिल; वासुदेव गणेश पिंगले,1, पंजाबी; हेमचंद्र कानूनगो,1, बंगाली; राजगुरु, 4, हिंदी-2, उर्दू-2; रानी लक्ष्मीबाई, 1, हिंदी; रोशन सिंह,1, उर्दू; मानवेन्द्रनाथ रॉय, 3, अंग्रेजी, बंगाली, मराठी; बंदासिंह संगवाल, 1, पंजाबी; सचिन्द्रनाथ सान्याल, 3, हिंदी, सिंधी-2; विनायक दामोदर सावरकर, 4, गुजराती, तमिल, तेलुगु, उर्दू; जतिंद्रमोहन सेन गुप्ता, 1, अंग्रेजी; सुखदेव, 4, हिंदी-2, उर्दू-2; सन् यात सेन, 1, बंगाली; बाल गंगाधर तिलक, 4, बंगाली, हिंदी, मराठी, सिंधी ।[10]

प्रतिबंधित जीवनी साहित्य में सबसे प्रमुख गौर करने की बात यह है कि ये जीवनियाँ उद्देश्यपरक थीं। इन जीवनियों का उद्देश्य तत्कालीन जनमानस को देशी-विदेशी क्रांतिकारियों के 'क्रांति-जीवन' से प्रेरित कर उनमें राजनीतिक चेतना का विकास करना था। इसलिए लेखकों ने इन जीवनियों को अपने इस उद्देश्य के इर्दगिर्द ही रखा है और यही वजह रही है कि इन जीवनियों में ऐसे व्यक्तित्वों के केवल 'क्रांति-जीवन' का ही चित्रण मिल पाता हैं। इनमें से अधिकांश आकार में भी बहुत लघु हैं, बल्कि कुछ को तो जीवनी न कहकर जीवनीपरक लेख कहना ही उचित होगा। उद्देश्यबद्धता के कारण ये जीवनियाँ आज के जीवनी साहित्य के प्रतिमानों पर जरूर खरा नहीं उतरती लेकिन इसके बावजूद इनकी उपेक्षा नहीं की जा सकती।

ये प्रतिबंधित हिंदी जीवनियाँ तत्कालीन विश्व साहित्य से भी प्रेरित थीं। इन प्रतिबंधित जीवनियों में कई जीवनियाँ यूरोपीय भाषाओं से अनूदित हैं। इससे स्पष्ट है कि तत्कालीन लेखक-वर्ग अन्य भाषाओं के साहित्य से भली प्रकार परिचित था। इसी के प्रेरणास्वरूप और स्वाधीनता आन्दोलन के काल में राजनीतिक चेतना के विकास के उद्देश्य को फलीभूत करने के कारण न केवल हिंदी बल्कि अन्य भारतीय भाषाओं में भी जीवनी एवं अन्य गद्य विधाओं के विकास की शुरुआत सम्भव हो सकी।

लेखकीय तटस्थता और वस्तुनिष्ठता – ये दो प्रतिमान जीवनी साहित्य के सबसे महत्वपूर्ण प्रतिमान समझे जाते हैं लेकिन जैसा की ऊपर उल्लेख किया गया है कि अधिकांश प्रतिबंधित जीवनियाँ उद्देश्यबद्ध हैं अतः कई जगहों पर लेखकीय तटस्थता की बजाय विषय के प्रतिपादन में लेखक की सक्रिय सहभागिता स्पष्ट नजर आती है। इस तरह की लेखकीय सहभागिता उन पक्षों पर और ज्यादा स्पष्ट है जहाँ व्यक्ति के जीवन के माध्यम से राष्ट्रीय चेतना के निर्माण की थोड़ी-सी भी सम्भावना दिखाई देती हो। ऐसी जगहों पर लेखक ने अपने लेखन-कौशल का सर्वोत्तम उपयोग किया है। एक क्रांतिकारी की जीवनी के शुरुआत में क्रांतिकारी का परिचय इस प्रकार दिया गया है – "वह अज्ञानी, नादान, अपरिचित, भोला तथा सीधा-सादा मजदूर (श्रमिक) जिसकी दार्शनिकता से भरपूर भाग्य तथा विशुद्ध भाग्य केवल श्रम करना था, जो भूखे मरना, नंगे रहना, झोपड़ियों में बसना, बेबसी तथा

गन्दगी से भरी हुई जिंदगी बिताना, झिडकियां और ठोकरे खाना अपना भाग्य समझता था जिसका प्रभु, जिसका स्वामी बेरहम तथा स्वार्थी और खून चूसने वाला पूंजीपति था जिसका उद्देश्य नृशंस अत्याचार द्वारा पूंजी जमा करना था। आज वह दुनिया के लिए एक मुसीबत बना हुआ है। पूंजीपति द्वारा दिए गए भाग्य को परिश्रम से बदलना चाहता है और अपने परिश्रम के बल बूते पर दुनिया के मजदूरों की शानदार जायदाद की बनावट में व्यस्त है। इनमें इस प्रकार की भावनाएं उत्पन्न करने वाले संसार में केवल थोड़े से पुरुष है जिनका समस्त जीवन मजदूरों की अवस्थाओं को सुधारने तथा बदलने और इनमें स्वाभिमान तथा जीवन-कण पैदा करने में बीता है।"[11]

विस्फोटक गद्य का एक और नमूना दृष्टव्य है –

"वे सन् 1857 ई. के दिन थे, जब कि संसार के पूर्वी भाग – भारत – में स्वतंत्रता की आभा सी निकल रही थी। गुलामी के अँधेरे में वर्षो रहते हुए प्राणियों के प्राणों पर बन आई थी और चमकती हुई तलवारें आशा की ओर इशारा कर रही थी। रक्त की धारा का प्रतिबिम्ब आकाश में अरुण का रूप धारण कर रहा था। इस नवीन युग के प्रमुख पात्र धुंधूपंत नाना साहब पेशवा का कानपूर और उसके आसपास अधिकार हो चुका था। बिठुर उसकी राजधानी थी। वीर सेनापति तांत्या टोपे ने झाँसी की महारानी लक्ष्मीबाई की सहायता से कालपी के मैदान में ले. बोकर को मैदान से भगा दिया था।"[12]

इस प्रकार की विस्फोटक और क्रांतिकारी गद्य वाली इन जीवनियों का एक साम्राज्यवादी सरकार द्वारा प्रतिबंधित होना कोई आश्चर्य की बात नहीं ।

चूँकि जीवनी अभी अपनी प्रारम्भिक अवस्था में थी और दूसरा, पाठक वर्ग का रूचि-परिष्कार का कार्य भी अभी अपनी प्रारम्भिक अवस्था में ही था अतः इस समय की कई जीवनियों में आधिभौतिक वर्णन अधिक मिलते हैं जो कि आज के जीवनी विधा के प्रतिमानों के अनुसार उचित नहीं हैं। ऐसे आधिभौतिक वर्णनों में पूर्व-जन्म, वचन-सत्यता, भविष्यकथन, चमत्कार आदि सन्दर्भ प्रमुख हैं। इनके अतिरिक्त कुछ क्रांतिकारियों को अवतार के रूप में भी दर्शाया गया है – "यदा यदा हि धर्मस्य – इस भगवद्वाक्य को चरितार्थ करने के लिए सन् १८५६ ई. की २३ वीं जुलाई को हमारे राष्ट्र सूत्रधार लोकमान्य तिलक के रूप में भगवान की विभूति का अवतार इस पराधीनतारूपी पाप से कलुषित भारत-भूमि में हुआ था।"[13]

भारतेंदु युगीन और द्विवेदी युगीन सांप्रदायिक राष्ट्रवाद, जिसके अंतर्गत मध्ययुगीन मुस्लिम-राज्य तथा मुस्लिमों की हिन्दुओं के प्रति बर्बरता का वर्णन शामिल होता था, का प्रभाव कुछ सीमा तक कम अवश्य हुआ था लेकिन पूरी तरह से समाप्त नहीं हुआ था अतः कई प्रतिबंधित जीवनियों में यह प्रभाव स्पष्ट देखने को मिलता है – "गुरु भक्त मंज भी अपने पीरखाने को तहस-नहस कर, संसार को अपना सच्चा उपदेश देते हुए बोला, भाइयों! शर्म की बात है कि आप हिन्दू होते हुए भी मुसलमानों का झूठा खाते हो। हमारे धर्म पर कुठार चलाने वाले तुर्कों की जड़ को सुदृढ बना रहे हो। हमारी माताओं और बहनों पर कुदृष्टि रखने वाले नरपिशाचों की कब्रों को पूजते हो। अगर तुम सच्चा हिन्दू अपने आप को बनाना चाहते हो तो एक बार देश में ऐसी प्रलयंकारी भीषण वायु चलाओ जिससे इनका पता भी लगना दुस्वार हो जाए।"[14]

यह उद्धरण 1934 में प्रकाशित और 1934 में ही प्रतिबंधित गुरु अर्जुनदेव की जीवनी से उद्‌दृत है। 1934 ई. में, जबकि कांग्रेस और महात्मा गाँधी का प्रभाव चरम पर था और सांप्रदायिक सद्भाव की भावना का प्रचार जोर-शोर से हो रहा था, ब्रिटिश सरकार द्वारा ऐसी अनेक पुस्तकें प्रतिबंधित की गई जिनको सांप्रदायिक पुस्तकों की श्रेणी में रखा जा सकता हैं।[15] ऐसी ही एक अन्य प्रतिबंधित जीवनी है जिसमें लेखक दावा करता है कि हिन्दू पुनः मुस्लिम कट्टरता के खतरे में हैं।[16] 'सचित्र हसन्-बिन-सभह : 800 वर्ष पुराना एक अद्‌भुत रहस्यमयी जीवन चरित्र'[17] नामक इस जीवनी का उर्दू से हिंदी में अनुवाद देवेन्द्रनाथ शास्त्री ने किया है।

अगर इस काल की जीवनियों में साम्प्रदायिकता के तत्त्व दिखाई पड़ते हैं तो सांप्रदायिक-सद्भावना के तत्त्व भी कम नहीं हैं – "मंगलमय भगवान् ने जब अपने राम-राज्य में हमें अधिक दिन तक रखना उचित नहीं समझा, तब आपने एक ऐसी शक्ति की छत्र-छाया हमारे ऊपर रख दी, जो विदेशी होकर भी हमारी मातृभूमि को अपनी मातृभूमि समझने लगी और जो हमारे सहोदर बन्धु सी हो गयी। विचारवान पाठकों से यह कहने की आवश्यकता नहीं, कि उस शक्ति से हमारा मतलब मुसलमानी शक्ति है। पर कालचक्र ने वह छत्रछाया भी हमारे ऊपर से उठा ली और एक ऐसी शक्ति का बोझ हमारे सिर पर लद गया, जो हमारे लिए बिल्कुल नयी, अजीब और बेढंगी थी।"[18]

प्रतिबंधित जीवनियों में जीवनी के नायक को भारत माता के सुपुत्र के रूप में दर्शाते हुए उसके संघर्षों की कथा का वर्णन सर्वत्र है। भारत माता का सच्चा सपूत, यह देशभक्त अनेक कष्ट सहता हुआ अंततः अपने देश या अपने धर्म के लिए समर्पित होता हुआ दिखाया जाता था। राष्ट्र को 'भारत माँ' के रूप में देखने की परिकल्पना भले ही आधुनिक हो, लेकिन कई मध्यकालीन युगपुरुषों की जीवनियों में भी भारत माता का जिक्र यदा-कदा मिल ही जाता है, गुरु अर्जुन देव (1563-1606) की जीवनी से लिया गया यह उद्धरण दृष्टव्य है – "मंज के सर पर लकड़ियों का भार था। कभी वृक्ष में अटककर, कभी पत्थर से टकराकर गुरुभक्त मंज गिर जाता था। इधर मंज गिरता था और उधर मेघमाला अट्टहास से अपनी क्रूरता का चित्र मंज के हृदयपट पर अंकित करती थी। परन्तु फिर भी भारत माता का सुपुत्र मंज कभी पर्वतों को, कभी नदियों को उलांघता हुआ सीधा आगे बढा ही चला जाता था ...."[19]

भारत की दुर्दशा और भारत के दुर्भाग्य पर टीसभरी पीड़ा भी इन जीवनियों में यत्र-तत्र व्यक्त हुई हैं। जैसे उस काल की और उससे पहले की अधिकांश महत्वपूर्ण कविताओं में भी यह पीड़ा खुलकर सामने आई है जिनमें 'भारत-दुर्दशा', 'भारत-दुर्भाग्य' और 'भारत-भारती' जैसी रचनाएँ प्रमुख हैं। इसी के साथ भारत के दुर्भाग्य पर क्षोभ व्यक्त करते हुए कहीं धिक्कार, कहीं रोष तो कहीं आह्वान का स्वर भी व्यक्त हुआ है –

"देश में एक बलिदान के बाद ही सच्ची स्वतंत्रता की लग्न लगती है। परन्तु अभागे भारतवर्ष तू ऐसी दो-दो भेंट लेकर भी उसी अवस्था में है। अरे गुलाम भारत आज से मैं तुझे भारत न कहूँगा। उस देश के रहने वाले भीरु मनुष्यों को भी भारतीय न कहूँगा।"[20]

प्रतिबंधित जीवनियों में इस बात का विशेष ध्यान रखा जाता था कि जीवन से जुड़े किन पहलुओं पर बल देकर आगे लाना हैं और कौनसे पहलुओं का संक्षिप्त में उल्लेख करना हैं। प्रतिबंधित जीवनियों में क्रांतिकारियों के जीवन से जुड़े उन मुद्दों को बहुत अधिक स्थान दिया गया हैं जिनसे जनता में अंग्रेजी सरकार के खिलाफ उठ रही विद्रोह की भावना को बल मिले। उदहारणस्वरूप, भगत सिंह की अधिकतर जीवनियों में उनके जीवन के पूर्व-भाग का बहुत संक्षिप्त में उल्लेख कर दिया गया है लेकिन उनके जीवन के उत्तरार्द्ध के बारे में विस्तृत वर्णन किया गया है जिसमें नौजवान भारत सभा की स्थापना, सांडर्स की हत्या, असेम्बली बम्ब कांड, लाहौर षड़यंत्र केस, अदालत में बयान, कारावास और फांसी के बारे में विस्तार से वर्णन मिलता है। के.एल.गुप्ता, आगरा से 1931 ई. में प्रकाशित और उसी वर्ष प्रतिबंधित भगत सिंह की जीवनी 'सरदार भगत सिंह' नाम से है।इस जीवनी के 44 पृष्ठों में प्रारम्भ के 2 पृष्ठों में उनके प्रारम्भिक 21 वर्षों का जीवनचरित लिखा गया है जबकि असेम्बली बम कांड व सांडर्स हत्याकांड में भगत सिंह पर अदालत में चल रहे मुकदमे में उनका बयान 'सिंह गर्जना' शीर्षक से कुल 10 पृष्ठों में विस्तार से वर्णित है।[21] स्पष्टतः उन घटनाओं व पहलुओं को अतिरिक्त ऊर्जा के साथ लिखा जाता था जिनसे पाठकों में आक्रोश की ज्वाला को ईंधन मिलने की सम्भावना ज्यादा हो। इस हेतु कई बार तो किसी क्रांतिकारी के जीवन चरित को उसके कार्य के विशेष संदर्भ के साथ लिखा जाता था और शीर्षक में भी उसका स्पष्ट उल्लेख किया जाता था। 1930 ई. में प्रकाशित **204** पृष्ठों की पुस्तक 'लाहौर षड्यंत्र अर्थात् सरदार भगत सिंह'[22] इसी परिप्रेक्ष्य में लिखी गई जीवनी है जिसमें लाहौर षड्यंत्र के केस के विशेष संदर्भ के साथ भगत सिंह के जीवन की अन्य घटनाओं का उल्लेख है। इसी प्रकार 'लाहौर के शहीद' शीर्षक से 1931 ई. में प्रकाशित पुस्तक में भी लाहौर षड्यन्त्र केस के अभियुक्तों का जीवन-चरित दिया गया है और साथ ही केस का दिनवार ब्यौरा भी शामिल है।[23] 1922 ई. में विश्वामित्र कार्यालय, कलकत्ता से प्रकाशित 304 पृष्ठ की पुस्तक 'जेल के यात्री' को भी इसी क्रम में रखा जा सकता है। इसमें 11 प्रमुख नेताओं के जेल में व्यतीत जीवन का वर्णन है जिसमें महात्मा गाँधी, बाल गंगाधर तिलक, श्री अरबिंदो, लाला लाजपत राय, मोतीलाल नेहरु, सैफुद्दीन किचलू, चितरंजन दास, अबुल कलाम आजाद का नाम शामिल हैं।[24]

प्रतिबंधित जीवनियों में मार्मिक स्थलों का चयन बहुत सावधानीपूर्वक किया जाता था। प्रायः ऐसे स्थान इस प्रयोजन के लिए चुने जाते थे जिनके माध्यम से यह दिखाया जा सके कि क्रांतिकारियों का तत्कालीन जनमानस पर कितना और किस तरह का प्रभाव था। इसके लिए अदालती कार्यवाहियों में क्रांतिकारियों के बयान, क्रांतिकारियों की फाँसी या उनके अंतिम संस्कार के दृश्यों का भावपूर्ण और विस्तार से वर्णन किया जाता था। 'स्वर्गीय श्री यतीन्द्रनाथ की संक्षिप्त जीवनी' नामक प्रतिबंधित जीवनी में शहीद यतीन्द्रनाथ के जेल में भूख हड़ताल से स्वर्गवास के बाद उनके अंतिम संस्कार का वर्णन दृष्टव्य है जिसमें उनकी अंतिम यात्रा के समय जनमानस की भावनाओं और देशभक्तिपूर्ण परिवेश का वर्णन है –

"जहाँ शव रखा गया था वह स्थान तीर्थ-स्थल सा पवित्र शोभा पूर्ण हो रहा था। जहाँ-तहाँ पुष्पमालाएँ लटक रही थी, राष्ट्रीय झंडे लगे हुए थे और अनेक प्रकार के आदर्श वाक्यों की तख्तियां लगी हुई थीं। सुगन्धित द्रव्य बराबर जल रहे थे। लाहौर की डिफेन्स कमेटी के सदस्य, जो शव के साथ आये हैं वह चबूतरे के इर्दगिर्द बैठे दिखाई दे रहे थे, जिस पर शव रखा हुआ था। ये

सब लोग बड़े भक्तिभाव से और शांति के साथ शव पर चँवर डुला रहे थे। कुछ पंडित भी इस स्थान पर उपस्थित थे और टाउन हाल से श्मशान यात्रा आरम्भ होने तक पवित्र मन्त्रों का पाठ कर रहे थे। चबूतरे से शव के उठाने और आँगन में लाने के पेश्तर कुछ मिनट तक गंभीर दृश्य दिखाई दे रहा था। इस बीच में एक अल्पवयस्क लड़की जो खद्दर के कपडे पहिने थी गंभीरता और स्तब्धतापूर्वक हाथों में पुष्प-गुच्छ लिए हुआ चबूतरे के पास आई और उसको राष्ट्रवीर के चरणों पर चढ़ाकर और शीश नवाकर वापस गई। यह मार्मिक दृश्य उस समय ऐसा करुणाजनक चरितार्थ हुआ जिससे प्रत्येक प्राणी के आँखों में प्रेमाश्रुओं की धारा प्रवाहित हो चली। हाल के अंदर दीवारों पर आदर्शवाक्यों की जो तख्तियां लगी थी, उनमें से चंद चुने हुए वाक्य नीचे दिए जाते हैं – 'मृत्यु ही जीवन है, पीड़ित लोग ही धन्य है, अन्धकार ही से उजेला मिलता है, पुण्यकार्य से ही राष्ट्र की प्रतिष्ठा होती है और शहीद यतीन्द तेरा यह उत्साह।"[25]

"कुल मिलकर यतीन्द्रनाथ दास के बलिदान का जो प्रभाव भीड़ पर पड़ा वह दर्शनीय था । लोग शांत थे, पर उनकी शांति में अपार और भयंकर क्रांति छिपी भासित होती थी ।"[26]

इस तरह के वर्णनों का अलग ही प्रभाव होता रहा होगा। यही कारण है कि 20 पृष्ठों की इस जीवनी में कुल 9 पृष्ठों में शहीद यतीन्द्रनाथ दास की अंतिम यात्रा का वर्णन है जिसे अलग शीर्षक भी दिया गया है – 'सब कह रहे है लाश किसी नौजवां की है, ऐ दास जनाजा तेरा किस धूम से निकला।'

इन जीवनियों का प्रभाव और बढाने के लिए प्रायः ऐसी जीवनी के साथ-साथ क्रांतिकारी और अन्य प्रसिद्ध राष्ट्रवादी नेताओं के चित्र भी छपे होते थे। यतीन्द्रनाथ की इस जीवनी में भी यतीन्द्रनाथ दास के साथ-साथ महात्मा गांधी का भी चित्र छपा है, जिस पर लिखा है – जगतगुरु महात्मा गाँधी। इन चित्रों का प्रभाव और अधिक बढाने हेतु इनके साथ प्रायः कुछ संदेश भी लिखा मिलता है।

प्रसिद्ध क्रांतिकारियों के अलावा कुछ गुमनाम क्रातिकारियों की जीवनियाँ भी इस काल में लिखी गई और प्रतिबंधित हुई है। प्रसिद्ध क्रांतिकारियों जैसे भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद, सुभाषचंद्र बोस आदि की जीवनियाँ न केवल संख्या में अधिक है बल्कि एकाधिक भाषाओं में भी प्राप्य हैं। वहीं कुछ अल्पप्रसिद्ध क्रांतिकारियों की जीवनियाँ प्रायः उस प्रान्त की भाषा में ही मिलती है जिस प्रान्त से वह क्रांतिकारी संबंध रखता है उदाहरणस्वरूप मोटा सिंह, बंतासिंह संगवाल, मथुरा सिंह प्रभृति पंजाबी क्रांतिकारियों की जीवनियाँ पंजाबी में मिलती हैं और बंगाली क्रांतिकारियों जैसे, सुरेन्द्रनाथ बनर्जी, उपेन्द्रनाथ बनर्जी, आनंदमोहन बोस, रासबिहारी बोस, प्रमोदरंजन चौधरी, पुलिनबिहारी दास, पूर्णचन्द्र दास, बारीन्द्रकुमार घोष, भूपेन्द्रनाथ दत्त आदि की जीवनियाँ बंगाली भाषा में हैं।

कुछ अल्पप्रसिद्ध क्रांतिकारियों की जीवनियाँ हिंदी में भी हैं जो प्रतिबंधन का शिकार हुई। ऐसी जीवनियों में से एक पुस्तक दृष्टव्य है – इमदाद 'साबरी' द्वारा लिखी गई, 1946 में प्रकाशित और प्रतिबंधित, 'नेताजी के साथी'। इस पुस्तक में ला. हनवंत सहाय, ला. शंकरलाल, सरदार शार्दुल सिंह कविश्वर, श्री आर.एस. रूइकर, श्री कामथ, अब्बाद खान, श्रीमती लीलाराय,

मौलाना अशरफुद्दीन चौधरी, श्री मुकुंद लाल सरकार, श्री विश्वम्भर दयाल त्रिपाठी, श्री शीलभद्र याजी, सत्यनिरंजनबख्शी, श्री विजन बोस, श्री रासबिहारी बोस, जनरल मोहन सिंह, मेजर जनरल ए.डी. लोकनाथन, मेजर जनरल चैटर्जी, कर्नल हबीबुर्रहमान, डॉ. लक्ष्मी स्वामीनाथन, मेजर जनरल जमां कियानी, कर्नल एहसान कादिर, कर्नल इनायत अल्लाह हसन, कर्नल कासलीवाल, मेजर जनरल शाहनवाज, कर्नल गुलजारासिंह, कर्नल अरशद, मेजर जनरल भोंसले, कर्नल अजीज अहमद खां, मि. एस.ए. आयर, सरदार रामसिंह रावल, अनिल चन्द्र राय, सुबोध चन्द्र राय, गिरधर ठक्कर, चंद्रकांत ठक्कर, श्री परमानन्द, श्रीमती शीरा, श्री चोपड़ा, धनराज शर्मा, अनंत मुन्दगी, राघवेन्द्र मुन्दगी, चिरंजी लाल पालीवाल, रमेश मेहता, प. महाव्रत विद्यालंकार, सरदार जगतसिंह भाटिया, प. हरस्वरूप शर्मा, हुक्म सिंह, मनुदेव शास्त्री, भुवेश्चंद्र नंदी और सुरेशचंद्र मिश्र की जीवनियाँ संकलित हैं जो किसी-न-किसी रूप में नेताजी सुभाष चन्द्र बोस के सहयोगी रहे हैं। पुस्तक के लेखक ने पुस्तक का परिचय देते हुए लिखा है – "ला. शंकरलाल ने किस तरह जापान जाकर नेता जी के लिए जमीन तैयार की, नेता जी के साथियों के साथ कैसा अमानुषिक व्यवहार हुआ, आजाद हिन्द फ़ौज के अफसर कौन थे, और उन्होंने क्या क्या किया, इन सब बातों का इस पुस्तक में वर्णन है।"[27] यह पुस्तक ऐतिहासिक और साहित्यिक, दोनों दृष्टियों से बहुत महत्वपूर्ण हैं जिसका अलग से विस्तृत विवेचन अभीष्ट है।

इसी क्रम में प. विद्याभास्कर शुक्ल 'साहित्यालंकार' द्वारा लिखित 'युगांतर पुस्तक भण्डार' से प्रकाशित 241 पृष्ठ की पुस्तक 'आजादी के दीवाने' महत्वपूर्ण है। इस पुस्तक में कुल 32 क्रांतिकारियों की संक्षिप्त जीवनियाँ संकलित हैं, जिनके नाम इस प्रकार हैं – महाराज नन्द कुमार, बहादुरशाह के बेटे, राजा कुंवर सिंह, महारानी लक्ष्मी बाई, तांत्या टोपे, खुदी राम बोस, कन्हाईलाल दत्त, मदनलाल ढींगरा, मास्टर अमीर चंद, सूफी अम्बा प्रसाद, भाई बालमुकुन्द, तरुण करतार सिंह, सत्येन्द्र कुमार बसु, श्री विष्णु गणेश पिंगले, यतीन्द्रनाथ मुखर्जी, श्री सोहनलाल पाठक, बलवंत सिंह, भाई भाग सिंह, हरनाम सिंह, भाई वतन सिंह, वीरवर बंता सिंह, डॉ मथुरा सिंह, बंता सिंह धामिया, गोपी मोहन साहा, पं, गेंदालाल दीक्षित, राम प्रसाद 'बिस्मिल', अशफाक़उल्ला खां, रोशन सिंह, राजेन्द्रनाथ लाहिडी, यतीन्द्रमोहन दास, यू. पूंगी विजया और मेवा सिंह। पुस्तक के लेखक ने प्राक्कथन में लिखा है – "बात तो यह है कि हमारे देश के वे लाल जिनका बलिदान-आदर्श मेजिनी, मेक्स्विनी, गेरिबाल्डी अदि वीरों से भी कहीं बढ़कर है, इतने बिखरे हुए हैं कि हम उन्हें एक जगह देख भी नहीं सकते। उनके प्रति श्रद्धा भक्ति प्रकट करना तो दूर, बिल्कुल अनभिज्ञ हैं। ...उनके अपूर्व साहस, अद्भुत त्याग, विलक्षण बुद्धिमत्ता, उत्कट देशप्रेम और पवित्र चरित्रों की स्मृति तो हमें रखनी ही पड़ेगी, साथ ही यह भी जान लेना होगा कि हम रक्तपात से दूर शांति और सत्याग्रह के शस्त्रास्त्रों से ही स्वतंत्रता संग्राम में विजयी हो सकते हैं। इन्हीं भावों से प्रेरित होकर यह पुस्तक लिखी गई है।"[28]

स्पष्ट रूप से इस प्राक्कथन के माध्यम से अहिंसा के पक्ष में मत रखकर पुस्तक को प्रतिबंधित होने से बचाने का प्रयास लेखक ने किया है। जिस प्रकार भारतेंदुयुग और द्विवेदीयुग के लेखकों ने 'राजभक्ति' का सहारा लेकर पुस्तकों को प्रतिबंधित होने

से बचाया उसी प्रकार इस युग के लेखक स्वयं को अहिंसा के पक्षधर बताकर अपनी पुस्तकों को प्रतिबंधित होने से बचाते रहे हैं – "भारतेंदु और द्विवेदी युग में राष्ट्रीय स्वातन्त्र्य आन्दोलन का यह विस्फोटक मसाला 'राजभक्ति' के पानी में घोला घोंटा जाता रहा; छायावाद और प्रेमचंद युग में इस विस्फोटक मसाले में से 'राजभक्ति' का पानी अहिंसात्मक असहयोग की छाया में सुखाया गया।"[29] लेकिन ऊपर उल्लेखित क्रांतिकारियों की जीवनियों के इस पुस्तक में होने के कारण पुस्तक का प्रतिबंधित होना कोई आश्चर्य की बात नहीं थी। पुस्तक के प्रतिबंधन की रिपोर्ट में प्रतिबंधन के कारणों का हवाला देते हुए लिखा गया है –

"This book gives the life-sketches of those persons who tried to overthrow the British Government in India. It is written in a highly appreciative tone and mostly deals with the activities of the revolutionaries. It also contains a number of portraits. The following lines occur on the title page of the book — "Lest the plant of freedom should wither; Wo water it with our blood."

Paying a tribute to Tantiya Tope who fought against the English in 1857 **and was therefore hanged, the author says: "Such was the reward that & hero got for fighting heroically for the freedom of his country. Had Tantiya been born in a free country, he would like Shivaji and Napoleon have shaken the world with his courage and heroism. But he was born in a slave country like India. What more reward could he get? Blessed art Thou, O slavery!"**

The life-sketch of Khudi Ram Bose is prefixed with the following couplet:- 'We sacrifice our hearts and souls And whatever we have, we offer to our mother."[30]

प्रतिबंधित जीवनियों में महिला क्रांतिकारियों की जीवनियों की संख्या भी कम नहीं है। महिला क्रांतिकारियों में सर्वाधिक जीवनियाँ झाँसी की महारानी लक्ष्मी बाई की मिलती है। स्वतंत्रता आन्दोलन के काल में जनमानस पर 1857 ई. के स्वधीनता संग्राम के प्रभाव का अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि उस समय लिखे जाने वाले साहित्य में 1857 ई. और उससे संबंधित किसी भी पक्ष का उल्लेख मात्र उस साहित्य के प्रतिबंधन का पर्याप्त कारण था। यही कारण है कि पूरे भारतेंदु युग और द्विवेदी युग के साहित्य में 1857 ई. के संग्राम का नगण्य उल्लेख प्राप्त होता है और अगर उल्लेख मिलता भी है तो वह 'स्वाधीनता संग्राम' के रूप में न होकर 'अराजक बलवे' के रूप में है। इस कारण से उस समय के साहित्य में 1857 ई. के क्रांतिनायकों को 'पथभ्रष्ट सैनिक' के रूप में दर्शाया गया है – "लेकिन आज जुर्म कहलाती उनकी जो कुर्बानी थी।"[31] 1857 ई. के संग्राम को स्वाधीनता-संग्राम के रूप में देखने का पहला आग्रही प्रयास विनायक दामोदर सावरकर का '1857 का स्वातंत्र्य समर'[32] है जो मूलतः मराठी में[33] लिखी गयी और अंग्रेजी[34] व हिंदी में इसके अनुवाद हुए। सावरकर के इस कार्य से ब्रिटिश हुकूमत की परेशानी का अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि इस पुस्तक के प्रकाशित होकर वितरित होने से पहले ही इसकी सारी मूल एवं अनूदित प्रतियों को नष्ट करके इस पर प्रतिबंध लगा दिया गया। सावरकार के इसी कार्य के परिणामस्वरूप ही आगे 1857 ई. के संग्राम को 'प्रथम स्वाधीनता-संग्राम' के रूप में याद किया जाने लगा व इसे प्रेरणा के रूप में ग्रहण किया गया। इसी क्रम में रानी लक्ष्मीबाई की जीवनियों और रानी लक्ष्मीबाई से संबंधित काव्य को भी शामिल किया जा सकता है। रानी लक्ष्मीबाई की प्रथम

जीवनी मराठी में दत्तात्रेय बलवंत पारसनिक द्वारा लिखी 'झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई' को माना जाता है जिसके हिंदी में कई अनुवाद छपे और इसका व्यापक प्रभाव रहा।[35] हालाँकि यह जीवनी 1857 पर अंग्रेजी पक्ष के इतिहासकारों के दृष्टिकोण के आधार पर ही लिखी गई है लेकिन फिर भी इसका यह प्रभाव जरूर हुआ कि इसके बाद रानी लक्ष्मी बाई से संबंधित साहित्य व्यापक मात्रा में लिखा जाने लगा।[36]

अन्य महिला क्रांतिकारियों में डॉ लक्ष्मी स्वामीनाथन, श्रीमती शीरा, श्रीमती लीला राय के साथ-साथ नाना साहब की पुत्री मैना आदि कुछ ऐसे नाम है जिनकी जीवनियाँ प्रकाशित और प्रतिबंधित हुई।

कुछ पुस्तकें ऐसी भी हैं जिनको सही अर्थों में जीवनी तो नहीं कहा जा सकता लेकिन वे क्रांतिकारियों के जीवन के कुछ प्रसंगों से प्रेरणा लेकर लिखे गए प्रेरक-प्रसंग जरूर कहे जा सकते हैं। इस प्रकार की पुस्तकों में मुनीश्वर दत्त अवस्थी की पुस्तक 'बागी की बेटी' प्रमुख है। यह पुस्तक 1932 ई. में प्रकाशित और प्रतिबंधित हुई। इसमें भारतीयों के साथ-साथ कुछ प्रमुख विदेशी क्रांतिकारियों के जीवन से जुड़े प्रेरक-प्रसंग भी हैं। पुस्तक का शीर्षक नाना साहब की पुत्री मैना के जीवन से जुड़े एक प्रसंग से प्रेरित है। जब बिठुर पर नाना साहब का अधिकार होता है और कालपी के युद्ध में हारे हुए अंग्रेज सेनापति ले. बोकर के सहायक मि. फ्रेनल और उनके 29 साथी बिठुर के जेल में बंदी होते हैं तब नाना साहब की पुत्री मैना उनको मुक्त करती है, लेकिन जब बिठुर पर पुनः अंग्रेजों का अधिकार हो जाता है तब नाना साहब की पुत्री मैना को केवल इस दोष के लिए जलाकर मार दिया जाता है क्योंकि वह 'बागी की बेटी' थी। इस प्रसंग के माध्यम से दिखाया गया है कि अंग्रेज कितने कृतघ्न होते थे और भारतीय कितने दयावान – "तुम हिन्दुस्तानी कर्तव्य और दया को नहीं पहिचानते। इस लिए तुमको बताना पडेगा। कैदी! दया और कर्तव्य साथ-साथ नहीं रह सकते। शत्रु पर दया दिखाने का अर्थ है मुर्खता, युद्ध में दया करने का अर्थ है कायरता और बंधन में पड़े हुए शत्रु पर दया का अर्थ है कर्तव्यहीनता। हम अंग्रेज यदि तुम्हारी भांति कर्तव्य और दया को साथ-साथ रखते तो कभी के विलायत लद गए होते। हम कम्पनी वालों का भारत आने का कारण है सम्पत्ति-प्राप्ति।"[37] नाना साहब की पुत्री मैना को लेकर उस समय में विपुल मात्रा में साहित्य का सृजन हुआ और लगभग ऐसा साहित्य ब्रिटिश हुकूमत द्वारा प्रतिबंधित ही हुआ है। सन् 1932-34 के आन्दोलन के बहुत प्रसिद्ध जनगीत में मैना को इस तरह याद किया गया है –

"नानाजी की बेटी मैना जिन्दा दयी जलाय, तारावती पद्मावती जैसी गवी सुरग में धाय।

उन्ही की हमजोली निकली। सर बांधे कफ़नवा हो शहीदों की टोली निकली।"

'बागी की बेटी' में इस प्रकार की 20 कहानियाँ हैं, जो विविध विषयों को लेकर लिखी गई हैं। इनकी व्याप्ति भारत के मध्यकालीन इतिहास से लेकर आयरिश और रूस की क्रांति तक है। सभी कहानियाँ किसी-न-किसी रूप में सच्ची घटनाओं को आधार बनाकर लिखी गई हैं। इन कहानियों के शीर्षक ही इनके प्रतिबंधित होने कारणों की व्याख्या करने के लिए पर्याप्त हैं जिनमें से कुछ इस प्रकार हैं – 'स्वदेश के लिए', 'बलिदान की भावना', 'क्रान्तिकामना', 'विजयोत्सव', 'धर्म दृष्टि', 'संकल्प', 'समर्पण' आदि।

गद्य के अलावा पद्य और चम्पू में भी कई जीवनियाँ प्रतिबंधित हुईं हैं। बद्रीप्रसाद शर्मा 'प्रेम' द्वारा 1939 ई. में लिखी गई भगत सिंह की जीवनी 'हमारा शहीद देशभक्त सरदार भगतसिंह' गद्य व पद्य दोनों में है।[38] इसी क्रम में हर्षादत्त पाण्डेय 'श्याम' द्वारा भगत सिंह और चंद्रशेखर आजाद की पद्य में लिखी जीवनियाँ इन्हीं नामों से क्रमशः 1939 ई. व 1940 ई. में प्रकाशित होकर प्रतिबंधित हुईं।[39]

ये जीवनियाँ न केवल संबंधित क्रांतिकारियों का जीवन-चरित भर हैं, बल्कि इसके साथ-साथ उनके और अन्य महापुरुषों के जीवन एवं कार्यों के माध्यम से जनमानस को आंदोलित करने का प्रयास भी है, जो कि बाकी प्रतिबंधित क्रांतिकारी पद्य में भी बखूबी हुआ है। महापुरुषों के माध्यम से इस तरह का 'आह्वान-साहित्य' जो सोये हुए जनमानस को जगाकर उनमें क्रांति की चेतना भरने का कार्य करता हो, वही ब्रिटिश सरकार के लिए सबसे बड़ी चुनौती के रूप में सामने था। प्रतिबंधित जीवनी साहित्य केवल संबंधित क्रांतिकारी के जीवन पर ही सीमित साहित्य हो ऐसा नहीं है, बल्कि इसमें संबंधित क्रांतिकारी के माध्यम से भारतीय इतिहास एवं संस्कृति के उन पहलुओं, घटनाओं और नायको को सामने लाया गया है, जिन्होंने किसी भी रूप में माँ भारती के लिए अपना योगदान दिया हो और जिनका बलिदान आज भी जनमानस में रचा-बसा हो। इन कवियों का काम केवल उन महापुरुषों के नाम स्मरण करवाने का था –

"तुझ पर ही राम हुए पैदा, तैने ही कृष्ण बनाये थे । राणा प्रताप राणा कुम्भा से, धीर वीर प्रकटाये थे ।।

सूरमा शिवा से रण पुंगव, माताएं झाँसी वाली सी । रणचंडी दुर्गा महा कालिका, अरी-मर्दन मतवाली सी ।।

नाना ऐसे भारत-रक्षक और कुँवरसिंह-से जवाने को । देवी स्वतंत्रता के प्रेमी आजादी के दीवानों को ।।"[40]

हर्षादत्त पाण्डेय 'श्याम' द्वारा लिखित भगत सिंह की जीवनी में भगत सिंह के जन्म से लेकर उनके जीवन की प्रमुख घटनाओं यथा – गाँधी का प्रभाव, असहयोग आन्दोलन के वापिस लेने के बाद क्रांति की राह, काकोरी कांड, लाहौर षड़यंत्र, सांडर्स हत्या, असेम्बली बम्ब आदि से लेकर फांसी तक का ब्यौरा तुकबंदी में दिया गया है –

"सतलज, झेलम, रावी, व्यास आदि के स्थल में। पंजाब प्रान्त बसता है मित्र, भारत माँ के हृदयस्थल में।।

लायलपुर उसी इलाके में, मशहूर जिला कहलाता है। बस उसी जगह की दास्ताँ, यह खाकसार बतलाता है।।"[41]

"शादी की चर्चा सताइस की, साल छिड़ी थी जब घर में। तो जान बचाकर भाग आये, प्रियवर आप कानपुर में।।

आकर विद्यार्थी जी के संग, बलवंत नाम से काम किया। अनुभवी लेख निकाले, कितने ही कर नाम लिया।।"[42]

आजाद और भगत सिंह की इन दोनों जीवनियों में अंत में कांग्रेस के साथ रहने का संदेश इस प्रकार दिया गया है –

"जो काम करना हो, वो करना हाथ-पाँव बचाय कर। आजाद करना वतन को, कांग्रेस में आय कर।।

तन आत्मा पाएगी शांति, मान्यवर 'आजाद' की। आजाद हिन्दुस्तान की हो, सदा जिंदाबाद की।।"43

"जो कुछ करना आपको, कांग्रेस के साथ – रहकर करो, मित्रवर तो कुछ आवे हाथ ।"44

साहित्यिक दृष्टि ये जीवनियाँ हालाँकि साधारण तुकबंदी भर से ज्यादा कुछ नहीं कही जाएगी लेकिन जनसामान्य पर इस तरह की साधारण तुकबंदी का प्रभाव उत्कृष्ट साहित्यक मानकों पर खरी उतरने वाली रचना से ज्यादा होता था। यही वजह है कि इसी काल में लिखी जा रही ऐसी रचनाएँ प्रतिबंधित होने से बची रही जिनको आज हम हिंदी साहित्य के इतिहास में स्वाधीनता-संग्राम की पक्षधर रचनाएँ मानते हैं क्योंकि ऐसी रचनाओं की पहुँच जनसामान्य तक नहीं थी और इनका प्रभाव केवल साहित्यिक समुदाय तक सीमित था।

निष्कर्षतः स्वतंत्रता-संग्राम कालीन प्रतिबंधित हिंदी जीवनी साहित्य ऐतिहासिक और साहित्यिक दोनों दृष्टियों से बहुत महत्वपूर्ण है। इस साहित्य को स्रोत के रूप में उपयोग किए जाने पर ऐतिहासिक-शोध में व्यापक परिवर्तन देखने को मिलेगा और हिंदी साहित्य के इतिहास में शामिल किए जाने पर हिंदी साहित्य के इतिहास को एक नयी दिशा प्राप्त होगी। प्रतिबंधित साहित्य को हिंदी साहित्य के इतिहास में शामिल करने के बाद ही इस बात का विश्लेषण करना समीचीन होगा कि सही अर्थों में राष्ट्रीय-धारा का प्रतिनिधत्व करने वाला साहित्य किसे माना जाना चाहिए। इसी क्रम में किसी पाठ के – साहित्यिकता और जन-व्याप्ति – के पक्षों पर गंभीरता से विचार कर जन-व्याप्त साहित्य, जो हो सकता है कि साहित्यिक मानदंडों पर उस रूप में और उतना खरा न उतरे, को भी महत्त्व मिलना चाहिए जिसका वह अधिकारी है।

संदर्भ –

[1] हिंदी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचंद्र शुक्ल, नयी दिल्ली : प्रकाशन संस्थान, स. 2018, पृ. 415.

[2] 1857 के स्वाधीनता संग्राम का हिंदी साहित्य पर प्रभाव, भगवान दास माहौर, अजमेर : कृष्णा ब्रदर्स, 1976, पृ. 5.

[3] वही, पृ. 231.

[4] इसमें इन पुस्तकों में संकलित जीवनियाँ शामिल नहीं हैं - चाँद पत्रिका का फाँसी अंक (47 जीवनी) नेताजी के साथी (51 जीवनी) व आजादी के दीवाने (32 जीवनी)।

[5] चाँद के फाँसी अंक में संकलित 47 लघु जीवनियाँ इस प्रकार हैं – कुका विद्रोह के बलिदान, चापेकर बन्धु, कन्हाईलाल दत्त, सत्येन्द्रकुमार बसु, मदनलाल ढींगरा, अमीरचंद, अवधबिहारी, भाई बालमुकुन्द, बसंतोकुमार विस्वास, भाई भाग सिंह, भाई वतन सिंह, मेवा सिंह, प. कांशीराम, राधासिंह, करतार सिंह संभा, वी.जी. पिंगले, जगत सिंह, बलवंत सिंह, डॉक्टर मथुरा सिंह, बंतासिंह, रंगा सिंह, वीरसिंह, उत्तम सिंह, बाबु हरिनाम सिंह, सोहनलाल पाठक, देशभक्त सूफी अम्बा प्रसाद, भाई रामसिंह, भानसिंह, यतीन्द्रनाथ मुखर्जी, नलिनी वागची, उधम सिंह, गेंदालाल दीक्षित, खुशीराम, गोपिमोहन साहा, वोमेली युद्ध के चार शहीद, धन्ना सिंह, बंता सिंह धामिया, बर्याम सिंह धुग्गा, किशन सिंह गर्मज्ज, संता सिंह, दलीप सिंह, नन्द सिंह, कर्म सिंह, रामप्रसाद बिस्मिल, राजेन्द्रनाथ लहरी, रोशन सिंह, अशफाक़उल्ला खां।

[6] Notification (Miscellaneous), Government, United Provinces, No. 3774/Vlll - 100, Police Department, Dated December 10, 1928. Collection: Library Record, NAI, Accession No: B1830.

[7] Publications proscribed by the Government of India, A catalogue of the collections in the India Office Library and Records and the Department of Oriental Manuscripts and Printed Books, British Library Reference Division, Ed. GRAHAM SHAW and MARY LLOYD, THE BRITISH LIBRARY, 1985.

[8] नेताजी के साथी, इमदाद साबरी, इमदाद साबरी, 1946, Library Records, NAI, B584 – GRAHAM SHAW and MARY LLOYD द्वारा सम्पादित कैटेलॉग 'Publications proscribed by the Government of India, A catalogue of the collections in the India Office Library and Records and the Department of Oriental Manuscripts and Printed Books' में इसका उल्लेख नहीं है जबकि 'National Archives of India' के कैटेलॉग 'Patriotic Writings Banned by The Raj (1984)' में इसका उलेख है - Patriotic Writings Banned by The Raj, New Delhi : National Archives of India, 1984, p.40.

[9] Publications proscribed by the Government of India, A catalogue of the collections in the India Office Library and Records and the Department of Oriental Manuscripts and Printed Books, British Library Reference Division, Ed. GRAHAM SHAW and MARY LLOYD, THE BRITISH LIBRARY, 1985.

[10] इनमें 'चाँद के फाँसी अंक' में संकलित 47 लघु जीवनियों, 'बागी की बेटी' में संकलित 20 जीवनीपरक प्रसंगों, 'शहीदों की टोली' में संकलित 37 जीवनियों, 'रूस के हुतात्मा' में संकलित जीवनियों, 'आजादी के दीवाने' में संकलित 32 जीवनियों व 'नेताजी के साथी' में संकलित 51 जीवनियों को सम्मिलित नहीं किया गया है।

[11] नेताजी के साथी, इमदाद साबरी, इमदाद साबरी, 1946, Library Records, NAI, B584, पृ. 43.

[12] बागी की बेटी, मुनीश्वर दत्त अवस्थी, चौधरी एंड संस बनारस, 1932, Library Records, NAI, B252, पृ. 5.

[13] जेल के यात्री, अज्ञात, कलकत्ता : विश्वामित्र कार्यालय, 1922, Library Records, NAI, B437, पृ. 2.

[14] वही, पृ. 4.

[15] Banned Controversial Literature and Political Control in British India 1907-1947, N. Gerald Barrier, Manohar, 1976, P. 172-205 (Religious Controversy)

[16] Publications proscribed by the Government of India, A catalogue of the collections in the India Office Library and Records and the Department of Oriental Manuscripts and Printed Books, British Library Reference Division, Ed. GRAHAM SHAW and MARY LLOYD, THE BRITISH LIBRARY, 1985. P.81

[17] सचित्र हसन बिन सब्बाह : 800 वर्ष पुराना एक अद्भुत रहस्यमय जीवन चरित्र, प्रेमचन्द्र, अनु. देवेन्द्रनाथ शास्त्री, दिल्ली : मुरारी ट्रैक्ट सोसायटी, 1927, PP Hin B145.

[18] जेल के यात्री, अज्ञात, कलकत्ता : विश्वामित्र कार्यालय, 1922, Library Records, NAI, B437, पृ. 1.

[19] बलिदान, 1934, Library Records, NAI, B332, पृ. 6

[20] वही, पृ. 14.

[21] सरदार भगत सिंह, अज्ञात, आगरा : के.एल.गुप्ता, 1931, Library Records, NAI, B739.

[22] लाहौर षड्यंत्र अर्थात् सरदार भगत सिंह, अज्ञात, बनारस : चौधरी एंड संस, 1930, Library Records, NAI, B27.

[23] लाहौर के शहीद, स्वामी, जबलपुर : आजाद ग्रंथमाला, 1931, Library Records, NAI, B335.

[24] जेल के यात्री, अज्ञात, कलकत्ता : विश्वामित्र कार्यालय, 1922, Library Records, NAI, 437.

[25] स्वर्गीय श्री यतीन्द्रनाथ दास की संक्षिप्त जीवनी, अज्ञात, गोरखपुर : शिवचरणलाल गुप्ता,1930, Library Records, NAI, B918, पृष्ठ 7-8.

[26] वही, पृष्ठ 13.

[27] नेताजी के साथी, इमदाद साबरी, इमदाद साबरी, 1946, Library Records, NAI, B584, पृ. 1.

[28] आजादी के दीवाने, विद्याशंकर शुक्ल, प्रयाग : युगांतर पुस्तक भण्डार, अज्ञात, Library Records, NAI, B200, पृ. 1.

[29] 1857 के स्वाधीनता संग्राम का हिंदी साहित्य पर प्रभाव, भगवान दास माहौर, अजमेर : कृष्णा ब्रदर्स, 1976, पृ. 206.

[30] Notification (Miscellaneous), Government, United Provinces, No. 449/VIII – 29, Police Department, Dated February 8, 1930. Collection: Library Record, NAI, Accession No: B1843, p.1.

[31] झाँसी की रानी कविता, सुभद्रा कुमारी चौहान।

[32] 1857 का भारतीय स्वातंत्र्य समर, विनायक दामोदर सावरकर, हिंदी अनु. ग.र. वैशम्पायन, पुणे : निर्मल साहित्य प्रकाशन।

[33] मूलतः मराठी में '१८५७ च्या स्वातंत्र्य-समराचा इतिहास' नाम से।

[34] अंग्रेजी में 'The Indian War of Independence of 1857' नाम से अनुदित।

[35] 1857 के स्वाधीनता संग्राम का हिंदी साहित्य पर प्रभाव, भगवान दास माहौर, अजमेर : कृष्णा ब्रदर्स, 1976, पृ. 147.

[36] Publications proscribed by the Government of India, A catalogue of the collections in the India Office Library and Records and the Department of Oriental Manuscripts and Printed Books, British Library Reference Division, Ed. GRAHAM SHAW and MARY LLOYD, THE BRITISH LIBRARY, 1985.

[37] बागी की बेटी, मुनीश्वर दत्त अवस्थी, बनारस : चौधरी एंड संस, 1932, Library Records, NAI, B252, पृ. 7.

[38] हमारा शहीद देशभक्त सरदार भगत सिंह, बद्रीप्रसाद शर्मा 'प्रेम', मथुरा : हिंदी साहित्य मंदिर, 1939, Library Records, NAI, B58.

[39] भगत सिंह, हर्षादत्त पाण्डेय 'श्याम', कानपुर : बम्बई पुस्तकालय, 1939, Library Records, NAI, B254. व चंद्रशेखर आजाद, हर्षादत्त पाण्डेय 'श्याम', कानपूर : बम्बई पुस्तकालय कानपुर, 1940, Library Records, NAI, B339.

[40] भगत सिंह, हर्षादत्त पाण्डेय 'श्याम', कानपुर : बम्बई पुस्तकालय, 1939, Library Records, NAI, B254, पृ. 3.

[41] वही, पृ. 5.

[42] वही, पृ. 31.

[43] चंद्रशेखर आजाद, हर्षादत्त पाण्डेय 'श्याम', कानपूर : बम्बई पुस्तकालय कानपुर, 1940, Library Records, NAI, B339, पृ. 32.

[44] भगत सिंह, हर्षादत्त पाण्डेय 'श्याम', कानपुर : बम्बई पुस्तकालय, 1939, Library Records, NAI, B254, पृ. 32.